Shri Pratyangira Sahasranam Stotram

श्रीप्रत्यंगिरा सहस्रनाम स्तोत्रम्

SHRI RAJ VERMA JI

Contact- +91-9897507933**,** +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

प्रत्यंगिरा देवी भद्रकाली का ही उग्र एवं घातक स्वरूप है। जिनकी विधिवत उपासना करने से मनुष्य सर्वदुःखों से मुक्ति प्राप्त कर सौभाग्य प्राप्त करता है। जिस स्थान में इनकी विधिपूर्वक पूजार्चना की जाती है, वह स्थान शत्रुओं के भय से सदा मुक्त रहता है। तंत्रप्रयोग, भूतप्रेत, श्मशान–अस्थि–मज्जा आदि प्रयोगों से स्थान एवं शरीर की सम्पूर्ण सुरक्षा होती है। प्रत्यंगिरा क्रूर एवं उग्र देवी हैं, अतः इनकी साधना सुयोग्य गुरु के सान्निध्य में धैयपूर्वक करनी चाहिये। रात्रिकाल में शिवमन्दिर, शक्ति मन्दिर अथवा शून्यस्थान में विधिपूर्वक प्रत्यंगिरा सहस्रनाम का पाठ करने से समस्त दुःख व विपत्तियों से शीघ्र मुक्ति मिलती है।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

ईश्वर उवाच :- श्रुणु देवि प्रवक्ष्यामि सांप्रतंत्वत्पुरः सरम्। सहस्रनाम परमं प्रत्यंगिरायाः सिद्धये।।

सहस्रनामपाठी यः सर्वत्र विजयी भवेत्। पराभवो न चास्यास्ति सभायां वासने रणे।।

तथा तुष्टा भवेद्देवी प्रत्यंगिरास्य पाठतः। तथा भवति देवेशी साधकः शिव एवहि।।

अश्वमेध सहस्राणि वाजपेयस्य कोटयः। सकृत्पाठेन जायंते प्रसन्नायत्पराभवेत्।।

भैरवोऽस्य ऋषिश्छन्दोऽनुष्टुप् देवी समीरिता। प्रत्यंगिरा विनियोगः स्यात्सर्वसंपत्ति हेतवे।।

सर्वकार्येषु संसिद्धिः सर्वसंपत्तिदाभवेत्। एवं ध्यात्वा पठेद्देवीं यदी छेदात्मनोहितम्।।

विनियोग :- ॐ अस्य श्री प्रत्यंगिरा सहस्रनाम महामंत्रस्य भैरव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री प्रत्यंगिरा देवता, ह्रीं बीजं, श्रीं शक्तिः, स्वाहा कीलकं मम सर्वकार्य सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

ध्यानम् :- आशांवरामुक्त कचाघनच्छविर्ध्येया स चर्मासिकरा विभूषणा। दंष्ट्रोग्र वक्रा ग्रसिताहि ता त्वया प्रत्यंगिरा शंकर तेजसेरिता।।

स्तोत्रम् :- ॐ देवी प्रत्यंगिरा सेव्या शिरसा शशिशेखरा। स ममा सा धर्मिणी च समस्त सुरशेमुषी।1।

सर्वसंपत्तिजननी समधीः सिंधु सेविनी। शुंभसीमंतिनी सोमाराध्या च वसुधा रसा।2।

रसा रसवती वेला वन्या च वनमालिनी। वनजाक्षी वनचरी वनी वनविनोदिनी।3।

वेगिनी वेगदा वेगबला स्थानबलाधिका। कला कलाप्रिया कोलि कोमला कालकामिनी।4।

कमला कमलास्या च मलस्या कमलावती। कुलीना कुटीला कांता कोकिला कुलभाषिणी।5।

कीरकेलिः कला काली कपालिन्यपि कालिका। केशिनी च कुशावर्त्ता कौशांबी केशवप्रिया।6।

काशी काशापहाकाशी शंकाशाकेश दायिनी। कुंडली कुंडलीस्था च कुंडलांगदमण्डिता।7।

कुशापाशी कुमुदनी कुमुदप्रीतिवर्धिनी। कुदंप्रिया कुंदरुचिः कुरंगमदमोदिनी।8।

कुरंगनयना कुंदाकुरु वृंदाभिनन्दिनी। कुसुम्भकुसुमा किंचित्क्वणत्किंकिणिका कटुः।9।

कठोरा करणा कंठा कौमुदी कंबुक कण्ठिनी। कपर्दिनी कपटिनी कठिनी कालकण्ठिका।10।

किबृहस्ता कुमारी च कुरुन्दाकुसुमप्रिया। कुंजरस्था कुंजरताकुंभि कुंभस्तनद्वया।11।

कुंभिगाकरभोरुश्च कदलीदल शालिनी। कुपिता कोटरस्था च कंकाली कंदशेदरा।12।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

एकांतवासिनी किंचित्कंपमान शिरोरुहा। कादंबरी कदंबस्था कुंकुमीप्रेमधारिणी।।13।

कुटुंबिनी प्रियायुक्ता क्रतुः क्रतुकरीक्रिया। कात्यायनी कृत्तिका च कार्त्तिकीयप्रवर्त्तिनी।।14।

कामपत्नी कामधात्री कामेशी कामवंदिता। कामरूपा कामगतिः कामाक्षी काममोहिता।।15।

खड्गिनी खेचरी खंजा खंजरीटेक्षणा खला। खरगा खरनासा च खरास्या खेलनप्रिया।।16।

खरांशुः खेटिनी खट्वांगधारिणी। खलखंडिनि विख्यातिः खडिता खंडवीस्थिरा।।17।

खंडप्रिया खंडखाद्यासेन्दुखंडा च खंजनी। गंगा गोदावरी गौरी गोमत्यपिच गौतमी।।18।

गया गौगजी गगना गारुडी गरुडध्वजा। गीता गीताप्रिया गौत्र गोत्रक्षयकरी गदा।।19।

गिरिभूपालदुहिता गोगा गोकुलवर्धिनी। घनस्तनी घनरुचि र्घनारुर्घननिःस्वना।20।

घूत्कारिणी घूतकरी घुघूकपरिवारिता। घंटानादप्रिया घंटा घनाघोट प्रवाहिनी।21।

घोररुपा च घोरा च घूनीप्रीति र्घनांजनी। घृताची घनमुष्टिश्च घटाघंटा घटामृता।22।

घटास्या घटानाद्यैश्च घातपातनिवारिणी। चंचरीका चकोरी च चामुण्डा चीरधारिणी।23।

चातुरी चपला चारुश्चला चेला चलाचला। चतुश्चिरंतना चाका चिया चामी करच्छविः।24।

चापिनी चपला चंपूश्चिंता चिंतामणिश्चिता। चार्तुवर्ण्यमयी चंचंच्चौरा चापा चमत्कृतिः।25।

चक्रवर्ति वधूश्चक्रा चक्रांगा चक्रमोदिनी। चेतश्चरी चित्तवृति रचेता चेतनप्रदा।26।

चांपेयी चंपक प्रीतिश्चण्डी चंडालवासिनी। चिंरजीवि तदाचित्ता तरुमूलवासिनी।27।

छरिकां छत्रमध्यस्था छिद्रा छेदकरीछिदा। छुच्छुंदरी पालयित्री छुंदरीभ निभस्वना।28।

छलिनी छलवच्छिन्ना छिटिका छेककृत्तथा। छद्मिनी छांदसी छाया छायाकृच्छदिरित्यपि ।29।

जया च जयदा जातिर्जृंभिनी जामलायुता। जयापुष्पप्रिया जाया जाप्य जाप्यजगज्जनिः ।30।

जंबूप्रिया जयस्था च जंगमा जंगमप्रिया। जंतु जंतुप्रधाना च जरत्कर्णाजरद्गवा ।31।

जाताप्रिया जीतनस्था जीमूतसदृशच्छविः। जन्याजनहिता जाया जंभ जंभिलशालिनी ।32।

जवदा जवद्वाहा जमानी ज्वरहा ज्वरा। झंझानीलमयी झंझाझणत्कार कराचला ।33।

झिंटीशा झस्यकृत् झंपायमत्रासनिवारिणी। टंकारस्था टंकधरा टंकारा कारणाटसी ।34।

ठकुराठीत्कुतिश्चैव ठिंठीरवसनावृत्ता। ठंठानीलमयी ठंठाठणत्कार कराठसा ।35।

डाकिनी डामरा चैव डिंडिमध्वनिनंदिनी। ढक्काप्रियस्वना ढक्कातपिनी तापिनी तथा ।36।

तरुणी तुंदिला तुंदातामसी च तपः प्रिया। ताम्राताम्रांबरा ताली तालीदलविभूषिणी ।37 ।

तुंगात्वरिता तोता तोतलाता दिनीतुला। तापत्रयहरा तारा तालकेशीत मालिनी ।38 ।

तमादलवच्छ्या मातालस्वनवतीतमी। तामसीचतमिस्रा च तीव्रातीव्रपराक्रमा ।39 ।

तटस्यागिल तैलाक्तातारिणी तपनद्युतिः। तिलोत्तमा तिलक कृत्तारका देशशेखरा ।40 ।

तिलपुष्पप्रिया तारा तारकेशकुटुंबिनी। स्थाणुपत्नी स्थितिकरी स्थलस्थास्थलवर्धिनी ।41 ।

स्थितिस्थैर्यास्थविष्ठा च स्थावतिः स्थूलविग्रहा। दंतिनी दंडिनी दीना दरिद्रा दीनवत्सला ।42 ।

देवी देववधू दैत्यदमिनी दंतभूषणा। दयावती दमवती दमदा दाडिमस्तनी ।43 ।

दंदशूकनिभा दैत्यदारिणी देवतानना। दोलाक्रीडा दयायुश्च दंपती देवतामयी ।44 ।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

दशा दीपस्थिता दोषाहादोषकारिणी। दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गमा दुर्गवासिनी ।45।

दुर्गंधनाशिनी दुःस्था दुःस्वप्नशमकारिणी। दुर्वारा दुंदुभिध्वाना दूरगा दूरवासिनी ।46।

दरदा दरहा दात्री दया दादुहितादशा। धुरंधरा धुरीणा च धौरेयी धनदायिनी ।47।

धीरा धीरा धरित्री च धर्मदा धीरमानसा। धनुर्धरा च धमिनी धूर्त्ता धूर्त्तपरिग्रहा ।48।

धूमवर्णा धूमपानां धूमला धूममोदिनी। नलिनीनंदनीरंदा नंदिनी नंदबालिका ।49।

नवीना नर्मदा नर्मीनेमिर्नियमनिश्चया। निर्मला निगमाचरा निम्नगा नग्निका निमिः ।50।

नाला निंरतरानिघ्नी निर्लेपा निर्गुणा नतिः। नीलग्रीवा निरीहा च निंरजन जनीनवी ।51।

नवनीतप्रिया नारी नरकार्णवतारिणी। नारायणी निराकारा निपुणा निपुणाप्रिया ।52।

निशा निद्रा नरेन्द्रस्थानमिता नमितापि च। निर्गुंडिका च निर्गुंडाानिर्मांसा नासिकाभिधा ।53।

पताकिनी पताका चपल प्रीतिर्यशश्विनी। पीना पीनस्ता पत्नी पवना शनशायिनी ।54।

परा पराकला पाका पाककृत्य रतिप्रिया। पवनस्था सुपवना तपसिप्रीतिवर्द्धिनी ।55।

पशुवृद्धिंकरी पुष्टिः पोषणी पुष्पवर्द्धिनी। पुष्पिणी पुस्तक करापुन्नागतलवासिनी ।56।

पुरंदरप्रिया प्रीतिः पुरमार्ग निवासिनी। पेशा पाशकरा पाशबंधहा पांशुलापशुः ।57।

पटः पटाशा परशुधारिणी पाशिनी तथा। पापघ्नी पतिपत्नी च पतिता पतितापि च ।58।

पिशाची च पिशाचघ्नी पिशिताशनतोषिता। पानदा पानपात्रा च पानदानकरोद्यता ।59।

पेषा प्रसिद्धिः पीयूषा पूर्णा पूर्णमनोरथा। पतदुर्भापतद्गात्रापौनः पुण्यपिवासुरा ।60।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

पंकिला पंकमग्ना च पामी पापंजरस्थिता। पंचमी पंचयामा च पंचता पंचमप्रिया।61।

पंचमुद्रा पुंडरीका पिंगला पिंगलोचना। प्रियंगुमंजरी पिंडी पंडिता पांडुरप्रभा।62।

प्रेतासना प्रियालुस्थापांडुघ्नी पीतसापहा। फलिनी फलदात्री च फलश्रीफणिभूषणा।63।

फूत्कारकारिणी स्फारा फुल्लफुल्लांबुजासना। फिरंगहास्फीतमतिः स्फितिः स्फीतिकरी तथा।64।

वनमाया बलारातिर्बलिनी बलवर्द्धिनी। वेणुवाद्या वनचरी वीरा विजयिनीअपि।65।

विद्या विद्याप्रदा विद्याबोधिनी वेददायिनी। बुधमाता च बुद्धा च वनमाला वती वरा।66।

वरदा वारुणी वीणा वीणावादनतत्परा। विनोदिनी विनोदस्थावैष्णवी विष्णुवल्लभा।67।

विद्या वैद्यचिकित्सा च विवशा विश्वविश्रुता। वितंद्रा विह्वला वेला विरावा विरतिज्वरा।68।

विविधार्क करावीरा बिंबोष्ठि बिंबवत्सला। विंध्यस्था वीरवन्द्या च वरीयानपरावित् ।69।

वेदान्त वेद्य वैद्या च वेदस्य विजयप्रदा। विरोधवर्द्धिनी वन्ध्या वंधनिवारिणी ।70।

भयिनी भगमाला च भवानी भयभाविनी। भीमा भीमानना भैमी भंगुरा भीमदर्शना ।71।

भिल्ली भल्लधरा भीरु भेरुंड्यभि भयापहा। भगसर्पिण्यपि भगा भगरूपा भगालया ।72।

भगासना भगामोदाभेरी भंकाररंजिनी। भीषणा भीषणारावा भगवत्यपिभूषणा ।73।

भारद्वाजी भोगदात्री भवघ्नी भूतिभूषणा। भूतिदा भूमिदात्री च भूपतित्वप्रदायिनी ।74।

भ्रमरी भ्रामरी नीलाभूपालमुकुटस्थिता। मता मनोहर मना मानिनी मोहनी मही ।75।

महालक्ष्मीर्मदक्षीवामदीय मदिगालया। मदोद्धता मदंगस्था माधवी मधुमादिनी ।76।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

मेधा मेधाकरी मेध्या मध्या मध्यवयस्थिता। मद्यपा मांसला मत्स्यमोदिनी मैथुनद्धता।77।

मुद्रामुद्रावती माता माया महिम मंदिरा। महामाया महाविद्या महामारी महेश्वरी।78।

महादेववधूर्मान्या मधुरा वीरमण्डला। मेदस्विनी मीलद् श्रीर्महिषासुरमर्दिनी।79।

मण्डपस्था मठस्था च मदिरागमगर्विता। मोक्षदा मुण्डमाला च माला मालाविलासिनी।80।

मातंगिनी च मातंगी मतंग तनयापि च। मधुस्रवा मधुरसामधूक कुसुमप्रिया।81।

यामिनी यामिनीनाथभूषाया व करंजिता। यंवाकुरप्रिया माया यवनी यवनाधिपा।82।

यमघ्नी यमकन्या च यजमानस्वरूपिणी। यज्ञायज्वायजुर्यज्वा यशोनिकरकारिणी।83।

यज्ञसूत्रप्रदा ज्येष्ठा यज्ञकर्मकरी तथा। यशस्विनी यकारस्था यूपस्तंभनिवासिनी।84।

रंजिता राजपत्नी च रमारेखा रवेरणी। रजोवती रजश्चित्रा रजनी रजनीपतिः।85।

रागिणी राज्य नीराज्या राज्यदा राज्यवर्धिनी। राजवन्ती राजनीतिस्तथा रजतवासिनी।86।

रमणी रमणीया च रामा रामावती रती। रेतोवती रतोत्साहा रोगहृद्रोगकारिणी।87।

रंगा रंगवती रागा रागज्ञा रागकृद्रणा। रंजिका रंजिका रंजा रंजिनी रक्तलोचना।88।

रक्तचर्मधरा रंजा रक्तास्या रक्तवादिनी। रंभा रंभाफलप्रीति रंभोरु राघवप्रिया।89।

रंगभृद्रंग मधुर रोदसी रोदसीग्रहा। रोधकृद्रोध हंत्री च रोगभृद्रोगशायिनी।90।

वंदी वंदिस्तुता बंध बंधूक कुसुमाधरा। वंदिता वंदितामाता विंदुरा वैंदवी विधा।91।

विंकि विंकपला विंका विंकस्था विंकवत्सला। वदि र्विलग्नाविप्रा च विधि र्विधिकरी विधा।92।

शंखिनी शंखवलया शंखमालावती शमी। शंखपात्राशिनी शंखा शंखाशंखगलाशशी।93।

शंवीशरावती श्यामाश्यामांगी श्यामलोचना। श्मशानस्था श्मशाना च श्मशानस्थलभूषणा।94।

शमदा शमहंत्री च शाकिनी शंकुशेखरा। शांतिः शांतिप्रदा शेषा शेषस्था शेषदायिनी।95।

शेमुखी शोषिणी शीरी शौरिः शौर्याशराशिरिः। शापहा शापहानीश शंपा शपथदायिनी।96।

श्रृंगिणी श्रृंगपल भुकूशंकरी शंकरीचया। शंका शंकापहाशंस्था शाश्वती शीतला शिवा।97।

शिवस्था शवभुक्ता वाशाववर्णा शिवोदरी। शायिनी शावशयना शिंशपा शिंशपायना।98।

शकुंडलिनी शैवा शंकरां शिशिराशिरा। शवकांची शवश्रीकाशवमाला शवाकृतिः।99।

शयनीशंकु वा शक्तिः शंतनुः शीलदायिनी। सिंधु सरस्वतीसिंधुः सुन्दरी सुंदराननना।100।

साधुः सिद्धिः सिद्धिदात्री सिद्धासिद्धसरस्वती। संततिः संपदा संपत् संविंत्सुरतिदायिनी।101।

सपत्नी सरसारा सरस्वतिकरी स्वधा। सरः समा समाना च समाराध्या समस्तदा।102।

समिद्धा समदा संमा संमोहा समदर्शना। समतिः समिधासीमा सावित्री सविधा सती।103।

सवनी सवनादारा सावना समरासमी। सिमिरा सतता साध्वी सध्रींचिंत्यसहायिनी।104।

हंसी हंसगतिर्हंसा हंसोज्ज्वल निचोलुयुक्। हलिनी हलदा हाला हरश्री हरवल्लभा।105।

हेला हेलावती हेषा ह्वेषस्था ह्वेषवर्द्धिनी। हंता हंतिर्हता हत्याहा हंत तपहारिणी।106।

हंकारी हंतकृद्धंकाहीहा हाता हताहता। हेमप्रदा हंसवती हारी हातरिसंमता।107।

होरी होत्री होलिका च होमा होमो हविर्हरिः। हारिणी हरिणीनेत्रा हिमाचलनिवासिनी।108।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

लंबोदरी लंबकर्णा लंबिका लंबविग्रहा। लीला लोलावती लोला ललनी लालिता लता।।109।

ललाम लोचना लोच्य लोलाक्षी लक्षणा लला। लंपती लुंपती लंपा लोपामुद्रा ललंतिनी।।110।

लंतिका लंबिका लंबा लघिमा लघुमध्यमा। लघीयसी लघुदयी लूता लूतनिवारिणी।।111।

लोमभृल्लोम कोप्ता च लुलुती लुलुसंयती। लुचायस्था च लहरी लंकापुर पुरंदरी।।112।

लक्ष्मीर्लक्ष्मीप्रदा लक्ष्म्या लक्ष्म्याबलमतिप्रदा। क्षुण्णाक्षुपाक्षणाक्षीणा क्षमः क्षांतिः क्षणावती।।113।

क्षामाक्षमोदरी क्षीमाक्षौमभृत्क्षत्रियांगना। क्षया क्षयाकरी क्षीरा क्षीरदा क्षीरसागरा।।114।

क्षेमंकरी क्षयकरी क्षयतत्क्षणदाक्षतिः। क्षुंरती क्षुद्रिका क्षुद्रा क्षुत्क्षामाक्षर पातका।।115।

फलश्रुति :- मातुः सहस्त्रनामेदं प्रत्यंगिर्याः प्रदायकम्। यः पठेत्प्रयतोनित्यं स एवस्यान्महेश्वरः।।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

अनाचांतः पठेन्नित्यं दरिद्रा धनदोभवेत्। मूकस्याद्वाक्पतिर्देवि रोगी निरोगतां भजेत्।।

अपुत्रः पुत्रमाप्नोति त्रिषुलोकेषु विश्रुतम्। बंध्यापिसूते तनयान् गावश्चबहुदुग्धदाः।।

राजानः पादनम्राः स्युस्तस्यदासा इवस्फुटाः। अरयः संक्षयं यांति मनसा संस्मृता अपि।।

दर्शना देवजायंते नरानार्योपितद्वशाः। कर्ता हर्ता स्वयंवीरोजायते नात्रसंशयः।।

यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्। दुरितनं च तस्यास्तेनास्ति शोकाः कदाचन्।।

चतुष्पथेर्द्धरात्रयः पठेत्साधकोत्तमः। एकाकी निर्भयो धीरोदशावर्तं स्तवोत्तमम्।।

मनसा चिंतितं कार्यं तस्य सिध्येन्नसंशयः। विनासहस्रनाम्ना यो जपेन्मंत्रं कदाचन।।

न सिद्धो जायते तस्यमंत्रः कल्पशतैरपि। कुजवारे श्मशाने च मध्याह्ने योजपेदथ।।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

शतावृत्या र्संजायेत कर्ताहर्ता नृणामिह। रोगार्त्तोऽर्द्धनिशायां तु पठित्वा भसिसंस्थितः।।

सद्योनी रोगतां यातियदिस्यान्निर्भयस्तदा। अर्द्धरात्रे श्मशाने वै शनिवारे जपेन्मनुम्।।

अष्टोत्तरसहस्रं तद्दशवारं जपेत्ततः। सहस्रनाम चेत्तद्धितदायाति स्वयंशिवा।।

महापवनरूपेण घोरगोमायुनादिनी। तदायदि न भीतिस्यात्ततोद्रंध्रीतिवा भवेत्।।

तदापशुवलिं दद्यात्स्वयं गृहणाति चंडिका। यथेष्टं च वरदं दत्त्वा याति प्रत्यंगिरा शिवा।।

रोचना गुरु कस्तूरी कर्पूर मदचंदनैः। कुंकुम प्रथमाभ्यां तु लिखितं भूर्जपत्रके।।

शुभनक्षत्रयोगे तु कृत्रिमाकृत सक्रियः। कृत संतापनां सिद्धिं धारयेद्दक्षिणेकरे।।

सहस्रानामस्वर्णस्थं कण्ठेवापी जितेन्द्रियः। तदायंत्रं नमेन्मंत्रीं क्रुद्धध्वेसंम्रियते नरः।।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

यस्मै ददाति सस्वस्ति सभवेद्धनदोपमः। दुष्टश्वापद जंतूनांनभीः कुत्रापि जायते।।

बालकानामिमां रक्षां गर्भिणीनामपि ध्रुवम्। मोहनस्तभनाकर्षण मारणोच्चाटनानि च।।

यंत्रधारणतो नूनं जायते साधकस्य तु। नीलवस्त्रे विलिखतं ध्वजायां यदितिष्ठिति।।

तदानष्टा भवत्येव प्रचण्डा परवाहिनी। एतज्जप्तं महाभस्मललाटे यदि धारयेत्।।

र्तशनत एवस्युः प्राणिनस्तस्यकिंकराः। राजपत्न्योपि वशगाः किमन्याः परयोषितः।।

एतज्जप्तं पिबेत्तोयं मासैकेन महाकविः। पंडितश्च महादक्षौ जायते नात्रसंशयः।।

शक्तिं सम्पूज्य देवेशि पठेत्स्तोत्रं वरंशुभम्। इहलोके सुखंभुक्त्वा परत्र त्रिदिवंजयेत्।।

इतिनामसहस्रं तु प्रत्यंगिरा मनोहरम्। गोप्यं गुप्ततमं लोके गोपनीयं स्वयोनिवत्।।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

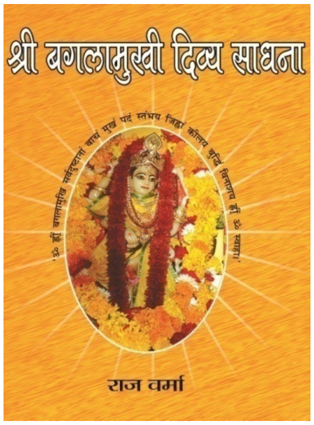

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413